विखण्डन
(DECONSTRUCTION)

नई समीक्षा में कृति की अखण्डता और अन्तःसम्बन्धों के अन्वेषण पर बल था वहीं **विखण्डन** में कृति की समग्रता को खण्डित कर उपपाठों के रूप में देखने की रीति पर बल दिया जा रहा है, जो एक सीमा तक उपयोगी हो सकती है।

'देरिडा' विखण्डन का कोई परम्परागत रूप सम्भव नहीं मानते अर्थात् उसका कोई पूर्व दर्शन या समीक्षा सिद्धान्त नहीं है। 'विखण्डन' परम्परावादी पाश्चात्य दर्शन या विचारधारा का निषेध करता है। साहित्य समीक्षा के साथ-साथ दर्शन, नृविज्ञान तथा मानविकी के सभी विषय 'देरिडा' के लिए विखण्डन की वस्तु है।

'विखण्डनवाद' में न रचना को बड़ा माना गया है न समीक्षा। दोनों ही रचनाएं हैं क्योंकि दोनों में प्रामाणिक अनुभव होते हैं, किन्तु ये अनुभव पाठ केन्द्रित ही होते हैं। विखण्डनवाद साहित्य (पाठ) और समीक्षा में कोई भेद नहीं मानता और न ही वह इस बात को स्वीकारता है कि सर्जक समीक्षक से बड़ा होता है और कृतिकार की भाषा समीक्षक की भाषा से उच्च- कोटि की होती है।

संस्सूर ने भाषागत दो भेदों 'पेरोल' (Parole) और 'लेंगुई' (Langue) को **नकार दिया**। देरिडा ने अपनी पुस्तक

Scanned by TapScanner

'आफ ग्रामाटोलोजी' में स्पष्ट किया कि संस्सूर ने लिखित पाठ की संरचना में अन्तर्निहित दूसरे अर्थ की बात कहकर 'लेखन' को द्वितीय श्रेणी का बना दिया। देरिडा के अनुसार, ''संस्सूर की यह धारणा कि भाषा का लिखित रूप जीवन्त नहीं होता, बोला हुआ रूप ही जीवन्त होता है, पूर्णतः भ्रामक है।'' देरिडा की दृष्टि में लेखन ही तो भाषा की पूर्व शर्त है। लेखन भाषा का वह व्यापार है जो भाषा को अनुशासित करता है और अर्थ को नाना सन्दर्भों से जोड़ता है। देरिडा भाषा और अर्थ (Thought) के विषय में विचार प्रकट करते हुए कहता है, अर्थ के अनुरूप शब्द का चयन लेखक करता है, अतः अर्थ की स्थिति पहले और शब्द की स्थिति बाद की है, जबकि अधिकांश विचारक इससे उलट शब्द की स्थिति पहले और अर्थ की स्थिति बाद में मानते हैं।

देरिडा की विखण्डनवादी दृष्टि का यह केन्द्रवर्ती बिन्दु है और इससे यह प्रतिपादित होता है कि जहां संस्सूर संरचना को महत्व देता है, जबकि देरिडा संरचना के विखण्डन को महत्व प्रदान करता है।

देरिडा विखण्डन को एक प्रकार की भाषायी रणनीति मानते हैं। विखण्डन संरचना के पार्थक्य पर बल देकर अब तक छिपे अर्थ की इंगित पर ध्यान केन्द्रित करता है। देरिडा चिन्तन के हर आयाम पर विखण्डन लागू करना चाहते हैं। वे विखण्डन को 'पाठ' पढ़ने की ऐसी रणनीति मानते हैं, जो पूर्व निर्धारित 'पाठ संरचना' के गृहीत अर्थ से भिन्न अर्थों के संधान में सहायक होती है। देरिडा ने बताया कि मार्क्स और लेनिन के 'पाठ' (Text) को विखण्डित करके पढ़ा जाना चाहिए जिससे पाठ में छिपे पूर्व निश्चित अर्थ (व्यंग्य) के अतिरिक्त उस पाठ की अनेकार्यता को खोजा जा सके।

देरिडा के विखण्डनवाद में संरचनावाद से साम्य भी हैं और वैषम्य भी। वस्तुतः देरिडा संरचनावाद के विरोधी न होकर उत्तर संरचनावादी है। देरिडा संरचनावाद की इस धारणा से सहमत हैं कि 'पाठ' की सत्ता लेखक से स्वतन्त्र होती है अर्थात् पाठ का अर्थ पाठ की संरचना से ही अनुस्यूत है, बाहर से आरोपित नहीं अतः आलोचना बाहरी हेतुओं (धर्म, दर्शन, समाज) की अवधारणाओं से अनुप्राणित नहीं होती। जब संरचना स्वयं की भाषा में ही कैद नहीं रहती, विखण्डित होकर अनेकार्यता का द्योतन करती है तब वह विखण्डन है।

विखण्डन साहित्यिक अवधारणाओं का उत्तरवर्ती रूप है। इसमें विलोमों के सहारे 'पाठ' विश्लेषण पर बल दिया जाता है। एक ही पाठ (Text) की शब्द, अलंकार, दर्शन और साहित्य की इन बिन्दुओं के आधार पर की गई समीक्षा विखण्डन का कार्य है।

'विखण्डनवाद' के अनुसार एक ही 'पाठ' की दो व्याख्याएं हो सकती हैं और अनेक भी। अर्थ का निर्णायक अब लेखक नहीं अपितु 'पाठक' और उसके पढ़ने की पद्धति है।

'उत्तर संरचनावाद' ने 'स्त्री-पाठ' पर बल दिया गया है। स्त्री-पाठ का अर्थ है—किसी 'पाठ' को औरत की दृष्टि से पढ़ना। किसी 'पाठ' को पुरुषवादी मनोवृत्ति से पढ़ने पर और उसी 'पाठ' को स्त्रीवादी मनोवृत्ति से पढ़ने पर निश्चित रूप से अर्थमत अन्तर आ जाता है। स्पष्ट है कि 'पाठ' के पढ़ने की रणनीति पर बल दिया जाता है। विखण्डन 'पाठ' में अनुस्यूत प्रत्यय की विलोमात्मक स्थिति है। क्रम को उलटकर 'पाठ' विश्लेषण करना कार्य-कारण श्रृंखला को उलटकर 'पाठ' को पढ़ना, विश्लेषित-विवेचित करना हमें यह दर्शाता है कि 'पाठ' जो उभारा गया है, ठीक उसी तरह दबाया भी गया है।

एलेन शुवाल्टर ने *Towards a feminist-Poetics* में कहा है कि एक स्त्री के रूप में पढ़ना (Feminist Reading) पाठ में निहित यौनवादी संरचना की सर्थकता को स्पष्ट करता है। पुरुष प्रधान समीक्षा को स्त्रीवादी दृष्टि से पलटने का उपक्रम विखण्डन है। इतिहास के महावृतान्त 'पाठ' ही हैं। हर पाठ का अर्थ और पाठक अनुभव पृथक् होता है। यहीं से अर्थ के दुधारेपन की अनुभूति होती है।

विखण्डन 'पाठ' और लेखन को नये ढंग से समझने की प्रक्रिया है। विखण्डन के अनुसार प्रत्येक पाठ पढ़ने पर पूरे अर्थ का नहीं अधूरे अर्थ का द्योतन कराता है इसीलिए वह हर बार पढ़े जाने पर नया होता है, नये अर्थों को उद्घाटित करता है। पाठ का कोई पठन स्थायी और अन्तिम नहीं होता वरन् तात्कालिक होता है। विखण्डन की प्रक्रिया 'पाठ' के दोहराने, बिखराने और कई बार प्रतिरोपण द्वारा सम्पन्न की जाती है। इस प्रकार देरिडा 'पाठ' (Text) के बाहर कुछ नहीं मानते।

देरिडा ने अपने ग्रन्थ 'ऑफ ग्रामेटोलोजी' में विखण्डन के तीन सूत्र दिए हैं :

1. भिन्नता (विलम्बन या स्थगन) (Difference)
2. निशान (चिह्न) (Trace)
3. आद्यलेखन (Arc Writing)

इनमें से प्रथम दो (Difference और Trace) साहित्य की भाषा संरचना तथा तीसरा अनकहे या अनजान की तलाश से सम्बन्धित है।

एक ही शब्द या पदबन्ध के दो भिन्न अर्थ ग्रहण किये जा सकते हैं, अतः प्रामाणिक अर्थ स्थगित या विलम्बित होता है। संरचनावाद और विखण्डनवाद वस्तुतः 'पाठ' पर बल देने वाले समीक्षा सिद्धान्त माने जा सकते हैं भले ही दोनों की प्रक्रिया भिन्न हो।

Scanned by TapScanner